उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

संस्कृतसाहित्यसम्मानसमारोहः

१९९६—९७

विश्वभारतीविशिष्टवेदपण्डितपुरस्कारप्राप्तवतां विदुषां प्रशस्तयः

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

संस्कृत साहित्य सम्मान समारोह

१९९६-९७

विश्वभारती, विशिष्ट एवं वेदपण्डित पुरस्कारप्राप्त विद्वानों

की

प्रशस्तियाँ तथा पुरस्कृत विद्वानों का विवरण

विषय सूची

क्र० सं०		पृष्ठ
१.	प्राक्कथन	४
२.	आचार्य श्री करुणापति त्रिपाठी	६
३.	डा० चण्डिका प्रसाद शुक्ल	१०
४.	प्रो० वीरेन्द्र कुमार वर्मा	१२
५.	प्रो० भोला शंकर व्यास	१६
६.	पं० श्री जगदीश शर्मा	२०
७.	डा० बलजिन्नाथ पण्डित	२२
८.	पुरस्कृत विद्वानों का विवरण	२५

प्राक्कथन

संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती ।।

संस्कृत भारत की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अमूल्य निधि है । यह एक भाषा ही नहीं हमारे भारतीय चिन्तन परम्परा की स्रोत है, जो अत्यन्त प्राचीनकाल से भारतीय जन-जीवन को प्रभावित करती रही है । हमारी संस्कृति और जीवन दर्शन के सभी अंग इसी भाषा और साहित्य में सुरक्षित हैं ।

संस्कृत संस्थान द्वारा भाषा के प्रचार प्रसार हेतु संचालित योजनाओं में पुरस्कार योजना विशेष महत्त्वपूर्ण है । संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष संस्कृत के लब्ध-प्रतिष्ठ एक विद्वान् को एक लाख इक्यावन हजार रुपये का "विश्व-भारती" संस्कृत पुरस्कार दिया जाता है, और पाँच विद्वानों को रु० ५१,०००/- (इक्यावन हजार रुपये) के पाँच विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं । वेद पाठ की प्राचीन परम्परा लुप्त न हो, इस उद्देश्य से प्रतिवर्ष १० वैदिक पण्डितों को पच्चीस हजार रूपये के वेद-पण्डित पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है । संस्कृत भाषा के आधुनिक लेखकों को उनके महत्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थों पर तथा प्राचीन ग्रन्थों पर भाष्य टीका वृत्ति इत्यादि की रचना एवं समीक्षात्मक सम्पादन करने वाले विद्वानों को नामित विशेष एवं विविध पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं ।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा उक्त पुरस्कारों की व्यापकता के लिए देश के प्रमुख समाचार पत्रों एवं संस्कृत पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापन देकर विद्वानों से उनकी कृतियों को आमंत्रित किया जाता है । वर्ष १९९५ के पुरस्कारों हेतु प्राप्त पुस्तकों की गुणवत्ता एवं योग्यता निश्चित करने के लिए संस्थान की कार्यकारिणी समिति द्वारा निम्नलिखित सदस्यों की पुरस्कार उपसमिति गठित की गई थी ।

(१)	आचार्य श्रीबलदेव उपाध्याय	अध्यक्ष
(२)	प्रो० अतुलचन्द्र बनर्जी	सदस्य
(३)	श्री रमेशचन्द्र रस्तोगी	सदस्य
(४)	डॉ० मण्डन मिश्र, कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	सदस्य
(५)	श्रीमती अलका श्रीवास्तवा, निदेशक	सदस्य-सचिव

पुरस्कार उपसमिति द्वारा पुरस्कारार्थ प्राप्त न्याय, वेदान्त, ज्योतिष्, वेद एवं व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के परीक्षण के लिए सम्बन्धित शास्त्र के विशेषज्ञ विद्वानों के पास भेजकर उनकी समीक्षा करा ली गई थी। संस्थान द्वारा दिये जाने वाले "वेद पण्डित पुरस्कार" के निर्णय हेतु होने वाले साक्षात्कार के लिए प्रत्येक शाखा के विशेषज्ञ वेद विद्वान् के सहयोग से कार्यालय में प्राप्त आवेदकों का साक्षात्कार कर पुरस्कार उपसमिति ने दस वेद पण्डितों का चयन किया। वर्ष १९९५ के साहित्य पुरस्कारों का भी सर्वसम्मति से पुरस्कार उपसमिति ने विशिष्ट पुरस्कार, वेद पण्डित पुरस्कार, नामित पुरस्कार, विशेष एवं विविध पुरस्कारों के निर्णय सम्बन्धी अपनी संस्तुति कार्यकारिणी समिति के अनुमोदनार्थ प्रस्तुत की, जिसकी कार्यकारिणी समिति द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया।

वर्ष १९९५ के "विश्वभारती" पुरस्कार के निर्णय हेतु शासन के निर्देशानुसार कार्यकारिणी समिति ने निम्नलिखित विद्वानों की एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया :—

(१) पद्मभूषण श्रीबलदेव उपाध्याय, — अध्यक्ष

(२) प्रो० मण्डन मिश्र, कुलपति — सदस्य
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

(३) प्रो० अशोक चटर्जी, निदेशक — सदस्य
पौराणिक एवं वैदिक अनुसंधान संस्थान, नैमिषारण्य

(४) प्रो० वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति — सदस्य
लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली

(५) श्रीमती अलका श्रीवास्तवा, निदेशक — सदस्य/सचिव

उक्त विशेषज्ञ समिति द्वारा वर्ष १९९५ के लिए आचार्य करुणापति त्रिपाठी, भूतपूर्व कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के नाम की "विश्वभारती" पुरस्कार हेतु संस्तुति की गई। संस्कृत संस्थान की कार्यकारिणी समिति ने विशेषज्ञ समिति की संस्तुति को सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा पुरस्कृत सभी साहित्यकारों, वेद पण्डितों, तथा विद्वानों को हार्दिक बधाई देती हूँ। पुरस्कारों के निर्णय से सम्बन्धित सभी विद्वानो उपसमिति एवं कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ, तथा सभी संस्कृत विद्वानों एवं संस्कृत भाषा अनुरागियों से सहयोग की कामना करती हूँ।

अलका श्रीवास्तवा
निदेशक

आचार्य श्री करुणापति त्रिपाठी

(विश्वभारती संस्कृत पुरस्कार)

रु० १,५१,०००/-

आचार्य श्रीकरुणापति त्रिपाठी ने १३.३.१९१३ ई० में पूर्वोत्तर प्रदेश के हृदयस्थान विश्वनाथ की प्रतिष्ठाभूमि वाराणसी को अपने जन्म से अलंकृत किया। इनके पिता पण्डित श्रीनारायणपति त्रिपाठी थे, जो विविध शास्त्र के मर्मज्ञ, कवित्व प्रतिभासम्पन्न, सदाचारपूत तथा विश्वविश्रुत महामहोपाध्याय शिवस्वरूप पण्डित शिवकुमार शास्त्री के जामाता थे। अनेक पुत्ररत्नों की जननी इनकी जननी का नाम श्रीमती राजेश्वरी देवी था। शाडिल्यगोत्रीय सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर इन्होंने तदनुकूल संस्कृत-शिक्षा अपने पूज्य पिता से, पण्डित श्रीकालीप्रसाद मिश्र से, महामहोपाध्याय पण्डित श्रीदामोदर लाल गोस्वामी से तथा स्वामिश्री मनीषानन्द जी महाराज से ग्रहण की। काशीस्थ राजकीय संस्कृत कालेज से और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से इन्होंने क्रमशः व्याकरणाचार्य और एम०ए० परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् उन्हीं अधीत संस्थाओं में चिरकाल तक अध्यापन करते हुए अपने सदाचारपूर्ण जीवन का इन्होंने उन्नयन किया, तदनन्तर अवस्थानुरूप वैदुष्यप्रकर्ष को प्राप्त कर श्रीत्रिपाठी जी ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति पद को तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ के अध्यक्ष पद को सुदीर्घ काल तक विभूषित किया।

पण्डितप्रवर श्री त्रिपाठी जी को "वाचस्पति" (डी० लिट्०) इस सम्मानोपाधि से श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), दिल्ली ने तथा काशीविद्यापीठ, वाराणसी ने पृथक्-पृथक् आमन्त्रित कर सम्मानित किया। इन्होंने उक्त विशिष्ट पदों के अतिरिक्त अनेक महत्त्वपूर्ण पदों को, जैसे-छात्रकल्याणसंकायाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्ष (सं० सं० वि० वि०, वाराणसी), यू० जी० सी० प्रोफेसर (काशीविद्यापीठ वाराणसी), यू० जी० सी० प्रोफेसर (के० एम० मुंशी संस्थान, आगरा), कार्यपरिषद् सदस्य, सम्मानित प्राध्यापक (सं० सं० वि० वि०, वाराणसी) इत्यादि उक्त, अनुक्त (पदों) को अलंकृत किया।

श्री त्रिपाठी जी ने विश्वविद्यालय में अध्यापन करते हुए चालीस से अधिक शोध-प्रबन्धों का मार्ग निर्देशन किया है एवं एक सौ पचास शोध-निबन्धों का लेखन किया है। इसी प्रकार इन्होंने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से काशीखण्ड (चार भागों में), रसिकजीवन, विराड्-

आचार्यश्रीकरुणापतित्रिपाठी

[विश्वभारतीसंस्कृतपुरस्कारः]

रु० १,५१,०००/-

आचार्यश्रीकरुणापतित्रिपाठी १३.३.१९१३ ईशवीयसंवत्सरे पूर्वोत्तर-प्रदेशीय-हृदयस्थानलब्ध-विश्वनाथाधिष्ठान-वाराणसीति-पुण्याभिधान-जनपदमात्मजनुषाऽलञ्चकार। अस्य पितुर्नाम पण्डितश्री-नारायणपतित्रिपाठी, यश्च विविधशास्त्रमर्मज्ञः कवित्वप्रतिभानभिज्ञः सदाचार-सम्पत्तिप्रतिपन्नो विश्व-विश्रुतवैदुष्यभूषामणिमहामहोपाध्यायशिवस्वरूप-पण्डितप्रवरशिवकुमारशास्त्रिणो जामाताऽऽसीत्। अस्य पित्रात्मानुरूपानूपपुत्ररत्नजननी जननी श्रीमती राजेश्वरीदेवी साक्षाद्देवीवासीत्। शाण्डिल्यगोत्रीयसरयू-पारीणब्राह्मणकुले लब्धजनुरयं तदनुसारिसारस्वतशिक्षणं संस्कृतस्य स्वपितुः सकाशात्ततः पण्डितश्रीकाली-प्रसादमिश्रविद्वद्वरसन्निधानान्महामहोपाध्यायदामोदरलालगोस्वामिपादान्तिकात् स्वामिश्रीमनीषानन्दमहा-राजसमीपाच्च यथाक्रममाजग्राह। वाराणसीस्थराजकीयसंस्कृतकालेजसंस्थातो व्याकरणाचार्यपरीक्षांकाशी-हिन्दू-विश्वविद्यालयतः संस्कृत-हिन्दीविषयकस्नातकोत्तर—(एम०ए०) परीक्षाञ्चायं प्रथमश्रेण्यामुत्तर-याञ्चकार। तदनन्तरञ्चायं तत्रैवाधीतसंस्थयोः काशी-हिन्दू-विश्व-विद्यालय-सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्व-विद्यालययोः सुचिरमध्यापनमनुष्ठाय तदाचारोचितं पवित्रं जीवनं निनाय। पुनश्च लब्धवयोऽनुरूपवैदुष्य-प्रकर्षः श्रीत्रिपाठिपण्डितवरो वाराणसी-स्थसम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य कुलपतिपद लक्ष्मणपुरस्थ–(लखनऊ-स्थित) उत्तरप्रदेशसंस्कृताकादमीसंस्थायाः सुदीर्घकालमध्यक्षपदं च समभूषयत्।

किञ्चायं श्रीत्रिपाठिपण्डितप्रवरो "वाचस्पतिः" (डी०लिट्०) इति सम्मानोपाधिना दिल्लीस्थ-श्रीलालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृत-विद्यापीठ–(मानितविश्वविद्यालय) द्वारा काशीस्थकाशीविद्यापीठ-द्वारा च पृथक् पृथगामन्त्र्य सम्मानितः। एनेन सुधियोक्तविशिष्टपदद्वयातिरिक्तमनेकानि महार्हपदानि यथा-छात्रकल्याणसंकायाध्यक्षपदं शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्षपदञ्च (सं० सं० वि० वि० वाराणसी), यू० जी० सी० प्रोफेसरपदं (के० एम० मुंशीसंस्थानम्, आगरा) यू० जी० सी० प्रोफेसरपदं (काशीविद्यापीठम्, वाराणसी) सम्मानितकार्यपरिषत्सदस्यपदं सम्मानितप्राध्यापकपदं च (सं० सं० वि० वि० वाराणसी) इत्येतान्यन्यान्यप्यनुक्तान्यलङ्कृतानि।

अपि चामुना प्रशस्यप्रतिभाजुषा विदुषा विश्वविद्यालयान्तः प्राध्यापकत्वमधितिष्ठता चत्वारिं-शदधिकशोधप्रबन्धानां मार्गनिर्देशनमकारि, पञ्चाशदुत्तरैकशतशोधनिबन्धानां च प्रणयनं व्यधायि। अपि

विवरण, गंगासहस्रनामस्तोत्र का तथा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से हिन्दी संक्षिप्त शब्दसागर, हिन्दी लघु शब्दसागर, हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास (तृतीय खण्ड), आधुनिक कोशविद्या का संक्षिप्त इतिहास का और उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ से स्तुतिमणिमाला (दो भागों में), पञ्चदशी, संक्षिप्त हिन्दी महाभारत, यतीन्द्रचरित, बृहद् ऋजुपाणिनीयम् का सम्पादन और लेखन करके बौद्धिक जगत् का महान उपकार किया है।

आचार्य श्री त्रिपाठी जी को राष्ट्रपति–पुरस्कार से, श्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा प्रदत्त ताम्रपत्र से, श्री रामचन्द्र शुक्ल की जयन्ती के अवसर पर तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा उपहृत ताम्रपत्र से तथा श्री काशी विद्वत्परिषद् द्वारा ससम्मान समर्पित अभिनन्दन-पद्य-पुष्पोपहार से विभूषित किया गया है।

ऐसे विलक्षण वैदुष्यसम्पन्न विद्वान् के शिष्ट व्यक्तित्व और विशिष्ट कृतित्व को दृष्टिपथ को आवर्जित करता हुआ समझ कर उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान पण्डित श्री त्रिपाठी जी को एक लाख इक्यावन हजार रुपये (१,५१,०००/-) "विश्व-भारती" नामक सर्वोच्च सम्मान (पुरस्कार) से सम्मानित करता हुआ अपने को अतिशय गौरवान्वित मानता है।

च सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयतश्चतुर्भागात्मककाशीखण्डस्य, रसिक-जीवनस्य, विराड्विवरणस्य, गंगासहस्रनामस्तोत्रस्य च तथा काशीस्थनागरीप्रचारिणीसभातो हिन्दीसंक्षिप्तशब्दसागरस्य, हिन्दीलघुशब्दसागरस्य, हिन्दीसाहित्यस्य बृहदितिहासस्य तृतीयखण्डस्य, आधुनिककोशविद्यायाः संक्षिप्तेतिहासस्य च, एवञ्च उत्तरप्रदेशसंस्कृताकादमीतो भागद्वयात्मक-स्तुतिमणिमालायाः, पञ्चदश्याः, संक्षिप्त-हिन्दी-महाभारतस्य, यतीन्द्रचरितस्य, बृहदृजुपाणिनीयस्य चेत्यादीनां भूरिसंख्यानां ग्रन्थानां सम्पादनं लेखनं च विधायानेन बौद्धिकं जगदुपाकारि।

अथायं श्रीत्रिपाठिपण्डितवरो राष्ट्रपतिपुरस्कारेण, प्रधान-मन्त्रिश्रीलालबहादुरशास्त्रिद्वारा दत्तताम्रपत्रेण, श्रीरामचन्द्रशुक्ल-जयन्त्यवसरे प्रधानमन्त्रिश्रीमती-इन्दिरागान्धिद्वारोपहृतताम्रपत्रोपायनेन, श्रीकाशीविद्वत्परिषद्द्वारा ससम्मानार्पिताभिनन्दनपद्यप्रसूनोपहारेण च समये समये सभाजितः।

एतादृक्षस्य विलक्षणशेमुषीकस्य विदुषः शिष्टव्यक्तित्वं विशिष्ट-कृतित्वञ्च दृष्टिपथमाकर्षयदालक्ष्योत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानमेनं पण्डित–श्रीत्रिपाठिनं एकपञ्चाशत्सहस्राधिकैकलक्षरूप्यकाणां "विश्व-भारती" त्याख्यातसर्वोच्चपुरस्कारेण सम्मानयदतितरां गौरवान्वितमात्मानमामनुते।

डॉ० चण्डिका प्रसाद शुक्ल

आचार्य डॉ० चण्डिका प्रसाद शुक्ल का जन्म सन् १९२१ ई० में प्रयाग जनपद के गंगातट पर स्थित परवा ग्राम में सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में हुआ था। वंश परम्परा से पूर्वज संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् होते थे। अतः शैशव से ही श्री शुक्ल जी पर संस्कृत विद्या के संस्कार पड़ने लगे थे। उन्होंने गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज वाराणसी से साहित्य में आचार्य एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम०ए० संस्कृत में उत्तीर्ण किया। पुनः इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही डी०फिल्० एवं डी०लिट्० शोध उपाधियां भी प्राप्त कीं।

डॉ० शुक्ल ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ही संस्कृत विभाग में १९५३ से अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया और विभाग में ही क्रमशः प्रवक्ता, प्रवाचक एवं प्राचार्य पदों को अलंकृत किया। अन्त में विभाग से अध्यक्ष पद से १९८१ में अवकाश प्राप्त किया। तदनन्तर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान दिल्ली द्वारा चूडामणि प्रोफेसर के रूप में नियुक्त होकर स्थानीय गंगानाथ-झा-संस्कृत-विद्यापीठ में अध्यापन भी किया। उसी समय भारत सरकार द्वारा आकाशवाणी नयी दिल्ली में संस्कृत कार्यक्रम की सलाहकार समिति के सम्मानित सदस्य नियुक्त हुए।

डॉ० शुक्ल की लेखनी से अनेक ग्रन्थ रत्न प्रसूत हुये हैं। सर्वप्रथम उन्होंने १९५० में सम्पूर्ण 'नैषध-चरित' महाकाव्य का हिन्दी अनुवाद किया। पुनः नैषध पर ही उनका विख्यात शोधग्रन्थ 'नैषध-परिशीलन' निकला, जिसका विद्वज्जगत् ने अतिशय हार्दिक अभिनन्दन किया। अपने डी०लिट् शोध प्रबन्ध के रूप में डॉ० शुक्ल ने श्रृंगारपरिशीलन लिखा जो श्रृंगाररस पर अद्वितीय शोध-ग्रन्थ है। नैषध की भाँति उन्होने 'शिशुपाल-वध' महाकाव्य पर 'माघकवि' नामक समीक्षा लिखी। आचार्य शुक्ल की सर्वश्रेष्ठ कृति 'ध्वन्यालोक' पर उनकी प्रसिद्ध 'दीपशिखा' नामक संस्कृत टीका है, जिसने संस्कृत साहित्य-जगत् को ध्वनि के विषय में एक नूतन एवं यथार्थ दृष्टि दी।

डा० शुक्ल में संस्कृत हिन्दी दोनों भाषाओं में काव्य-निर्माण की अद्‌भुत क्षमता है। उनका संस्कृत के लघुत्रयी एवं बृहत्त्रयी के कुछ अंशों का हिन्दी पद्यानुवाद 'मुक्ताफल' नाम से प्रकाशित हुआ था। उनकी नवीनतम कृति संस्कृत की अति सुरम्य प्रायः एक सहस्र सूक्तियों का हिन्दी दोहानुवाद हैं, जो 'सूक्ति-गंगाधर' नाम से प्रकाशित हुआ है।

प्रोफेसर शुक्ल के निर्देशन में ३२ छात्रों ने डी०फिल० तथा दो छात्रों ने डी०लिट्० की उपाधि प्राप्त की। डॉ० शुक्ल के विचारों की मौलिकता, प्रतिपादन की आकर्षकता, अध्यापन की प्रवीणता तथा विषयज्ञान के अतल गाम्भीर्य से छात्र सदा मुग्ध रहते थे। विद्या के साथ विनय उनकी सबसे बड़ी शेवधि है। उनकी कृतियाँ संस्कृत वाङ्मय की अमूल्य निधि हैं।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, साहित्य शास्त्र के मर्मज्ञ मनीषी डॉ० चण्डिका प्रसाद शुक्ल को इक्यावन हजार रुपये के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित कर गौरव का अनुभव करता है।

डॉ० चण्डिकाप्रसादशुक्लः

विशिष्ट-पुरस्कारः

रु० ५१,०००/-

आचार्य डॉ० चण्डिकाप्रसादशुक्लस्य जन्म १९२१ तमे ख्रीष्टाब्दे प्रयागजनपदे गंगातटस्थपरवा-नामके ग्रामे सरयूपारीणब्राह्मणकुलेऽभूत। कुलपरम्परया पूर्वजाः संस्कृतविद्याया मूर्धन्या विद्वांसोऽभवन्। अतः शैशवादेव श्रीशुक्लः संस्कृतसंस्कारपरिस्थितौ परिपोषणं प्रापत्। डॉ० शुक्लो वाराणसेय गवर्नमेण्ट-कालेजतः साहित्याचार्यपरीक्षाम्, इलाहाबाद-विश्वविद्यालयतः संस्कृतविषये एम०ए०परीक्षां चोत्तीर्णवान्। इलाहाबादविश्वविद्यालयत एव च शोधविषये डी०फिल्०–डी०लिट् इत्युपाधिद्वयमपि संस्कृतसाहित्यविषये लब्धवान्।

डॉ० शुक्लमहोदय इलाहाबाद-विश्वविद्यालय एव १९५३ तमात् ख्रीष्टाब्दात् संस्कृतविभागेऽध्या-पनकार्यं प्रारब्धवान्, तत्रैव च क्रमशः प्रवक्तृप्रवाचकप्राचार्यपदान्यलमकार्षीत्। अन्ते च १९८१ तमेऽब्दे तत एव विभागाध्क्षपदादवकाशं लब्धवान्। तदनन्तरं दिल्लीस्थराष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानद्वारा चूडामणिप्रोफे-सरपदे नियुक्तः। तदैव च भारतशासनेन आकाशवाणीमहानिदेशकसंस्कृतमन्त्रणासमितेः सदस्यो नियुक्तः।

आचार्यशुक्लस्य लेखनीतोऽनेकानि महीयांसि ग्रन्थरत्नानि प्रसूतानि। सम्पूर्णस्य नैषधीयचरितमहा-काव्यस्य हिन्दीभाषानुवादः, नैषधेऽद्वितीय शोधग्रन्थो 'नैषधपरिशीलनम्' श्रृंगाररसे डी०लिट्० शोधकृतिः 'श्रृगारपरिशीलनम्', शिशुपालवधमहाकाव्ये शोधलेखो 'माघकविः', लघुत्रयीबृहत्त्रयीगतकतिपयकाव्यां-शानां हिन्दीपद्यानुवादो 'मुक्ताफलम्', हिन्दीदोहानुवादसहितः संस्कृतसूक्तिसंग्रहः 'सूक्तिगंगाधरः' तथा तस्य सर्वश्रेष्ठा कृतिः विद्वद्वरेण्यैरभिनन्दिता सम्पूर्णस्य ध्वन्यालोकस्य सोपज्ञ-संस्कृतटीका 'दीपशिखेति' तस्य ग्रन्थरत्नानि विद्वत्सहृदयसमाजस्य सर्वदा कण्ठहारायन्ते।

आचार्यशुक्लनिर्देशने द्वात्रिंशच्छात्रैः डी०फिल्० उपाधिः गृहीतः द्वाभ्यां च डी०लिट्० उपाधिः। स्वविचाराणां मौलिकतया, प्रतिपादनविधेराकर्षकतया, अध्यापनकलायाः प्रवीणतया, विषयज्ञानस्यातल-गाम्भीरतया च डा० शुक्ले छात्राणामनन्या भक्तिर्विमुग्धता चासीत्। विद्यया सह विनयावनतिः शुक्लमहोदयस्य महान् शेवधिरस्ति। तस्य कृतयः संस्कृतवाङ्मयस्यामूल्या निधयो भवन्ति।

उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानमिदं डॉ० चण्डिकाप्रसादशुक्लमहोदयान् एकपञ्चाशत्सहस्ररूप्यकाणां विशिष्टपुरस्कारेण सभाजयद् महद् गौरवमनुभवति।

प्रो० वीरेन्द्र कुमार वर्मा

(विशिष्ट पुरस्कार)

रु० ५१,०००/-

डॉ० वीरेन्द्रकुमार वर्मा का जन्म १९३१ ई० में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर नगर में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सहारनपुर में ही हुई। आगरा बिश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त करने के अनन्तर डॉ० वर्मा ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम० ए० तथा पी-एच० डी० उपाधियाँ प्राप्त कीं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत महाविद्यालय से इन्होंने वेदाचार्य की उपाधि भी प्राप्त की। उपर्युक्त परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण इनको स्वर्णपदक भी मिले। डॉ० वर्मा ने डॉ० सूर्यकान्त तथा डॉ० गोपालचन्द्र मिश्र से वेदों का गहन अध्ययन किया।

१९६० ई० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में डॉ० वर्मा प्रवक्ता नियुक्त हुए। उसके बाद १९७१ से क्रमशः रीडर, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए अवकाश ग्रहण किया। डॉ० वर्मा कला संकाय के प्रमुख के रूप में अपने प्रशासन कौशल से प्रशंसित रहे हैं।

डॉ० वर्मा ने वेद के प्रातिशाख्य-ग्रन्थों पर विशेष शोधकार्य किया है। आपके २० से अधिक प्रकाशित ग्रन्थ हैं, जिनमें ऋग्वेद प्रातिशाख्य, ऋग्वेद प्रातिशाख्य-एक परिशीलन, वाजसनेयि प्रातिशाख्यम्, तैत्तिरीय प्रातिशाख्यम् आदि प्रमुख हैं। आपके अनेक शोधलेख भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ० वर्मा को 'वाजसनेयि प्रातिशाख्य' तथा 'तैत्तिरीय प्रातिशाख्य' पर उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान और राजस्थान संस्कृत अकादमी से पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

वैदिक वाङ्मय के संरक्षण, संस्कृत साहित्य के सम्वर्धन एवं श्लाघनीय सेवा के लिए राजस्थान संस्कृत अकादमी एवं श्रीनाथ दारस्थ मन्दिर-मण्डल ने संयुक्त रूप से डॉ० वर्मा को सम्मानपत्र प्रदान

प्रो० वीरेन्द्रकुमारवर्मा

(विशिष्ट-पुरस्कारः)

रु० ५१,०००/-

आचार्यवीरेन्द्रकुमारवर्ममहोदयस्य जन्म १९३१ (एकत्रिंशाधिकैकोनविंशतिशततमे) ईशवीये वर्षे उत्तरप्रदेशस्य सहारनपुरनगरे समभवत्। एतेषां प्रारम्भिकी शिक्षा सहारनपुरे एव जाता। ततः आगराविश्वविद्यालयतो बी० ए० उपाधिमधिगत्यैते काशीं सम्प्राप्ताः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयीयकला-सङ्कायस्य संस्कृतविभागे समधीत्य संस्कृतविषये एम०ए० पी-एच० डी चेत्युपाधी प्राप्नुवन्तः। काशीहिन्दू-विश्वविद्यालयीयसंस्कृतमहाविद्यालयतः मध्यमा वेदाचार्य इति परीक्षाद्वयमप्येभिः समुत्तीर्णम्। मध्यमा, एम०ए०, आचार्य एतासु तिसृष्वपि परीक्षासु प्रथमश्रेण्यां प्रथमस्थानमवाप्य तदर्थं स्वर्णपदकानि एभिः सम्प्राप्तानि। वाराणस्यां डा० सूर्यकान्तवर्याणां डा० गोपालचन्द्रमिश्रमहोदयानां च सकाशादेते वेदमधीतवन्तः।

१९६० स्रीस्ताब्दे डा० वर्ममहोदयानां नियुक्तिः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयीये संस्कृतविभागे प्रवक्तृपदे सञ्जाता। तत्र १९७० ईशवीतः क्रमशः रीडरपदे, प्रोफेसरपदे च संस्कृताध्यापनं कुर्वन्तः एते कार्यनिरताः आसन्। स्वकीये सेवाकाले षड्वर्षाणि यावत् संस्कृतविभागाध्यक्षपदमलङ्कुर्वाणाः डा० वर्ममहोदयाः काशीहिन्दूविश्वविद्यालये कलासङ्कायप्रमुखपदं विभूषयन्तश्च प्रशासनकौशलेन समेषां सम्बद्धजनानां मनांसि रञ्जयन्तो व्यराजन्त।

वैदिकवाङ्मये प्रातिशाख्यग्रन्थेषु आचार्यवर्ममहोदयैर्विशिष्टं सार्वदेशिकप्रशस्तं शोधकृत्यमनु-ष्ठितम्। एतेषां विंशाधिका ग्रन्थाः प्रकाशिताः सन्ति, येषु— ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्, ऋग्वेद-प्रातिशाख्यपरिशीलनम्, वाजसनेयिप्रातिशाख्यम्, तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम्, इत्यादयो ग्रन्थाः प्रमुखाः सन्ति।

श्रीमद्भिः वर्ममहोदयैः शताधिकसङ्गोष्ठ्यादौ शोधपत्राणि प्रस्तुतानि, विभिन्नासु संस्थासु च विशिष्टानि भाषणानि विहितानि। आचार्यवर्मवर्याणां रचनाः पुरस्कृतिमप्यलभन्त यथा—(१) वाज-सनेयिप्रातिशाख्यम् उत्तरप्रदेशसंस्कृताकादमीसंस्थया त्रिसहस्ररौप्यराशिना पुरस्कृतम्, (२) वाजसनेयिप्रा-तिशाख्यमेव राजस्थानसंस्कृताकादमीसंस्थया श्रीपन्नालालजोशिवेदपुरस्कारेण सभाजितम्, (३) तैत्तिरीय-प्रातिशाख्यम् उत्तरप्रदेशसंस्कृतादमीसंस्थया पञ्चसहस्ररौप्यराशिना पुरस्कृतम्, (४) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-मेव राजस्थानसंस्कृताकादमीसंस्थया पञ्चसहस्ररूप्यकात्मकेन विज्ञानपुरस्कारेण सभाजितम्।

किया है। आपके निर्देशन में शताधिक छात्र-छात्राओं ने शोधोपाधि (पी-एच० डी०) प्राप्त की। आप विद्या परिषद्, शोध समिति आदि के सदस्य के रूप में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से निरन्तर सम्बद्ध रहे हैं। प्रो० वर्मा इस समय भी सेवानिवृत्त आचार्य के रूप में वहाँ छात्रों को विद्यादान कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान वेद के विशिष्ट विद्वान् प्रो० वीरेन्द्रकुमार वर्मा को इक्यावन हजार रूपये के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित कर गौरव का अनुभव कर रहा है।

वैदिकवाङ्मयस्य संरक्षणे, संस्कृतसाहित्यसंवर्द्धने च श्लाघ्यसेवायै राजस्थानसंस्कृताकादमी–श्रीनाथद्वारस्थमन्दिरमण्डलाभ्यां संयुक्तरूपेण सम्मानपत्रमेभ्यः समर्पितम्। अन्याभिरनेकसंस्थाभिश्चैते सम्मानपत्रादिभिः सभाजिताः। डा० वर्ममहोदयानां निर्देशने शताधिकं छात्राश्छात्र्यश्च डाक्टरआफ-फिलासफीशोधोपाधिमलभन्त। विद्यापरिषदः शोधसमित्यादेश्च सदस्यतया वाराणसेयेन सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालयेन सन्ततं सम्बद्धाः श्रीवर्ममहोदयाः साम्प्रतमपि तत्र सेवानिवृत्ताचार्यरूपेण छात्रेभ्यो विद्यादाने निरता विद्यन्ते।

उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानमिदं डा० वीरेन्द्रकुमारवर्ममहोदयान् एकपञ्चाशत्सहस्ररूप्यकाणां विशिष्टपुरस्कारेण सभाजयद् गौरवमनुभवति।

प्रो० भोला शंकर व्यास

विशिष्ट पुरस्कार

रु० ५१,०००/-

प्रो० भोलाशङ्कर व्यास का जन्म बूंदी (राजस्थान) में बूंदी नरेशों के संस्कृत वैदुष्य के लिये प्रसिद्ध राजगुरु परिवार में फाल्गुन कृष्ण द्वादशी संवत् १९८१ को हुआ।

प्रो० व्यास जी ने अपने ग्रामस्थ संस्कृत विद्यालय में प्राचीन पद्धति से साहित्य तथा व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थों का, पितामह, पितृव्य तथा पिता के सान्निध्य में विधिवत् अध्ययन किया। आपने १९४७ ई० में आगरा विश्वविद्यालय से एम०ए० (संस्कृत परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रो० व्यास ने १९४८ ई० में काशीस्थ राजकीय संस्कृत कालेज से प्रथम श्रेणी में साहित्य शास्त्री और आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एल०एल०बी० उपाधि भी प्राप्त की। १९५० ई० में राजस्थान विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम०ए० परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रो० व्यास विश्वविद्यालयीय स्वर्णपदक से विभूषित हुए। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से ही क्रमश: १९५२ में पी०एच०डी० तथा १९६२ में डी० लिट् की उपाधियाँ प्राप्त की। १९५१ ई० में विदेश में रहते हुए प्रो० व्यास ने लन्दन विश्वविद्यालय के स्कूल आफ ओरियण्टल स्टडीज से भाषाविज्ञान का आधुनिक पद्धति से अध्ययन तथा शोधकार्य भी किया।

१९५३ ई० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक के रूप में प्रो० व्यास की नियुक्ति हुई और यहीं क्रमश: पदोन्नत होते हुए आपने हिन्दी विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष के पद को सुशोभित कर अवकाश ग्रहण किया। अवकाश ग्रहण के पश्चात् व्यास जी तीन वर्षों तक लब्धावकाश प्रोफेसर के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग से भी सम्बद्ध रहे हैं। वाराणसी में संस्कृत तथा हिन्दी के विद्वत्समाज में प्रो० व्यास का वैदुष्य समादृत है, और आपकी परिगणना संस्कृत काव्य समीक्षा, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, भाषाशास्त्र और हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय ख्याति के विद्वानों में की जाती है।

प्रो० व्यास हिन्दी-संस्कृत संस्थानों, विश्वविद्यालयीय परीक्षण-समितियों तथा लोकसेवा आयोगों के सम्मानित सदस्य रह चुके हैं। आप राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा विशिष्ट साहित्यिक पुरस्कार से भी पुरस्कृत हो चुके हैं। आप राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा विशिष्ट संस्कृत पण्डित के रूप में भी समादृत हुए हैं।

प्रो० भोलाशङ्करव्यासः

विशिष्टपुरस्कारः

रु० ५१,०००/-

राजस्थान प्रान्तीयबुन्दीनगरे गीर्वाणवाणी विदुषां बुन्दीनृपतिकुलगुरूणां परिवारे शशिवसुनन्द-क्ष्मामिते (१९८१) वैक्रमाब्दे फाल्गुनेमासि कृष्णद्वादश्यां लब्धजन्मानो व्यासमहोदयाः स्वगृहस्थितसंस्कृत-विद्यालये पितामहत्त्चरणेभ्य एव सुरभारत्याः प्रारम्भकीं शिक्षां गृहीतवन्तः। ततश्चस्वज्येष्ठपितृव्येभ्यः पितृपादेभ्यश्च साहित्यव्याकरणयोः प्रमुखग्रन्थानामध्ययनं विहितवन्तः। आदौ तावदेभिः पाश्चात्याधुनिक-पद्धत्यैव संस्कृतपरीक्षाः प्रदत्ताः आगराविश्वविद्यालयतो मुनिवेदग्रहभूमिते (१९४७) ईसवीयवर्षे संस्कृतविषये प्रथमश्रेण्यां एम०ए० परीक्षामुत्तीर्यैमेऽष्टाचत्वारिंशदधिकैकोनशततमे (१९४८) वर्षे काशीस्थ-राजकीय (गवर्नमेंट) संस्कृतकालेजतः प्रथमश्रेण्यां साहित्यशास्त्रिपरीक्षां, आगराविश्व-विद्यालयात् प्रथमश्रेण्यामेव एल०एल०बी० परीक्षाञ्चापि समुत्तीर्णाः तदनन्तरमेभिः राजस्थानविश्व-विद्यालयतः पञ्चाशदधिकैकोनशततमेऽब्दे (१९५० ई०) हिन्दीसाहित्येऽपि सर्वोच्चस्थानं लब्ध्वा प्रथमश्रेण्यां एम०ए० इत्युपाधिः विश्वविद्यालयीय-हिरण्यपदकञ्चोपार्जितम्। तत एव च द्वापञ्चाशदधि-कैकोनशतमे ईसवीयवर्षे (१९५२ ई०) पीएच०डी० उपाधिः, द्वाषष्ट्यधिकैकोनशततमे (१९६२) ऽब्दे डी०लिट्० इत्युपाधिश्चाप्येतैः समुपार्जितौ। विदेशं गत्वाऽपि व्यासमहोदयैर्लन्दनविश्वविद्यालयस्य स्कूल आफ् आरियंटल स्टडीज-इति प्रसिद्धे संस्थाने भाषाविज्ञानस्याधुनिकरीत्याऽध्ययनं गवेषणकार्यं च व्यधायि।

त्रयः पञ्चाशदधिकैकोनशततमे (१९५३) ईसवीयवर्षे काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य हिन्दीविभागे प्राध्यापकपदे नियुक्ता इमे तत्रैवाचार्यपदं विभागाध्यक्षपदञ्चालङ्कृत्य सेवानिवृत्ता वर्तन्ते। तदनन्तरं वर्षत्रयपर्यन्तमेते काशीहिन्दूविश्वविद्यालय एव लब्धावकाश-प्रोफेसरयोजनायां संस्कृतविभागेन सहाऽपि सम्बद्धा आसन्। प्रो० व्यासमहोदयाः संस्कृतकाव्यसमीक्षा-काव्यशास्त्र-नाट्यशास्त्र-छन्दःशास्त्र-भाषा-शास्त्रादिविषयेषु संस्कृत-प्राकृतापभ्रंश-हिन्दीसाहित्येषु च प्रकृष्टं वैदुष्यं भजन्तोऽनेकान् ग्रन्थान् संस्कृत-हिन्दी-आङ्ग्लभाषासु च शताधिक-शोधलेखाँश्च विषयेष्वेतेषु व्यरचन्। एभीरचितं "शक्तिविजयम्" नाम महाकाव्यमपि शीघ्रमेव प्रकाशयिष्यते।

प्रो० व्यासमहोदया नागरीप्रचारिणी (काशी)-उ०प्र० हिन्दीसंस्थान-केन्द्रीयसाहित्याकादमी-प्रभृति-संस्थासु कार्यकारिसमितीनां सदस्यत्वमलमकुर्वन्। एते राजस्थानसाहित्यकादम्या विशिष्टसाहित्य-

प्रो० व्यास ने संस्कृत काव्य समीक्षा, काव्यशास्त्र, भाषाशस्त्र तथा छन्द:शास्त्र से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन तथा संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में शताधिक लेखों की रचना की है। आप एक सफल संस्कृत कवि भी हैं। आप द्वारा विरचित 'विजयम् महाकाव्य निकट भविष्य में ही प्रकाश्यमान है।

प्रो० व्यास जी उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा प्रकाश्यमान संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास के तृतीय खण्ड 'आर्ष महाकाव्य' के सम्पादक हैं। सम्प्रति आप अपने वृद्ध प्रपितामह के ऐतिहासिक संस्कृत महाकाव्य 'रामविलासकाव्यम्' के सम्पादन-प्रकाशन में प्रवृत्त हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रो० व्यास जी के अप्रतिम वैदुष्य का आकलन करते हुए उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान इक्यावन हजार रुपये के विशिष्ट पुरस्कार से आपको पुरस्कृत कर परम गौरव का अनुभव करता है।

कारसम्मानेन, महाराणाफाउन्डेशन-संस्थानेन सरजतफलकं पुरस्कारराशिना राजस्थानसंस्कृताकादम्या च धातुफलक-सम्मानपत्रं पुरस्कारराशिञ्चोपहृत्य विशिष्टसंस्कृतविद्वत्सम्मानेन च सभाजिताः। अधुनाऽप्येते उ०प्र० संस्कृतसंस्थानेन प्रकाशयिष्यमाणे "संस्कृतवाङ्मयस्य बृहदितिहासे" आर्षमहाकाव्ययोर्वाल्मीकि-रामायणमहाभारतयोः समीक्षात्मकविवेचनविषयकस्य तृतीयखण्डस्य सम्पादकत्वे नियुक्ताः सन्ति। "भरतनाट्यशास्त्रस्य सांस्कृतिकं कलाशास्त्रीयञ्चाध्ययन" माधृत्यांग्लभाषायां ग्रन्थविरचने प्राचीनैतिहासिकमहाकाव्यं रामविलासस्य च सम्पादनादिकार्येऽप्यमी साम्प्रतं व्यापृता विद्यन्ते।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानं प्रो० भोलाशंकरव्यासमहोदयान् एकपञ्चाशत्सहस्ररूप्यकाणां विशिष्टपुरस्कारेण सभाजयद् महद् गौरवमनुभवति।

पण्डित श्री जगदीश शर्मा

[विशिष्ट पुरस्कार]

रु० ५१,०००/-

पण्डित श्री जगदीश शर्मा का जन्म जयपुर (राजस्थान) के समीपस्थ समेल्या ग्राम में पौष कृष्ण द्वादशी बुधवार वि० सं० १९६७ को हुआ। इनके पिता पं० श्री बिहारीलाल शर्मा महाराज संस्कृत कालेज जयपुर में साहित्य-वेदान्त विभागाध्यक्ष थे।

पण्डित शर्मा जी की प्रारम्भिक तथा उच्च शिक्षा जयपुर में हुई। आपने १९३१ ई० में साहित्याचार्य परीक्षा सर्वाधिक अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की, फलतः आपको स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। आपके विद्यागुरुओं में पं० बिहारीलाल शर्मा, पं० वीरेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा म० म० पं० शिवदत्त दाधिमथ प्रमुख हैं।

पं० जगदीश शर्मा ने चमडिया संस्कृत महाविद्यालय, शेखावाटी तथा संस्कृत महाविद्यालय, खेतड़ी में प्राचार्य के रूप में अध्यापन किया। इसके बाद श्री शर्मा ने महाराज संस्कृत कालेज जयपुर में साहित्य विभागाध्यक्ष पद को अलंकृत किया। सेवा निवृत्ति के पश्चात् राजस्थान के प्रथम मुख्य मन्त्री श्री हीरालाल द्वारा श्री शर्मा वनस्थली विद्यापीठ के वेद विद्यालय में प्राचार्य पद पर नियुक्त हुए। प्राचार्य पद पर १३ वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् आप वहाँ मानद आचार्य भी नियुक्त हुए।

श्री शर्मा की, छात्रावस्था से ही संस्कृत गद्य-पद्यरचना में अभिरुचि थी। 'संस्कृत रत्नाकर' पत्रिका में आपकी रचनायें समय-समय पर प्रकाशित हुई हैं। आप 'भारती' पत्रिका के सम्पादक भी रह चुके हैं। आपने गोपीनाथ दाधिमथप्रणीति 'आनन्द नन्दनम्' की व्याख्या तथा सम्पादन किया है। श्री शर्मा विरचित कृतियाँ निम्नलिखित हैं—बिहारि स्मारिका, वीरेश्वर प्रत्यभिज्ञानम्, श्री शिव प्रत्यभिज्ञानम् तथा श्री लक्ष्मीनाथजीवनवृत्तम्। पं० जगदीश शर्मा राजस्थान के सम्मानित विद्वानों में अग्रगण्य हैं।

श्री शर्मा राजस्थान सरकार द्वारा श्रेष्ठ अध्यापक के रूप में, शंकर अकादमी ऋषिकेश में जयन्त सरस्वती द्वारा लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् के रूप में तथा १९८२ ई० में राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। श्री शर्मा व्याकरण, न्याय, साहित्य आदि शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् तथा समर्थ समालोचक हैं। काव्य समालोचना के क्षेत्र में नीर-क्षीर-विवेक दृष्टि आपकी विशेषता है।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान पं० श्री जगदीश शर्मा की विशिष्ट संस्कृत सेवा को देखते हुए आपको इक्यावन हजार रुपये के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित कर गौरवान्वित है।

पण्डितश्रीजगदीशशर्मा

[विशिष्टपुरस्कारः]

रु० ५१,०००/-

पण्डितप्रवराणां श्रीजगदीशशर्मणाञ्जन्म जयपुरनगर्याः समीपस्थे 'समेल्या' नामके ग्रामे १९६७ वैक्रमाब्दे पौषकृष्णद्वादश्यां बुधवासरेऽभूत्। एषां पितृपादाः पं० बिहारीलालशर्माणो महाराजसंस्कृत-विद्यालये जयपुरे साहित्य-वेदान्तविभागाध्यक्षपदमलङ्कृतवन्तः।

श्रीजगदीशशर्मणां प्रारम्भिकोच्चशिक्षा जयपुरे राजकीयविद्यालयेषु सञ्जाताः। इमे हि १९३१ खिृष्टाब्दे साहित्याचार्यपरीक्षां प्रथमश्रेण्यामुत्तीर्य विश्वविद्यालयतः स्वर्णपदकमलभन्त। श्रीशर्मणां विद्यागुरुषु पं० बिहारीलाल शर्माणः, श्रीवीरेश्वरशास्त्रिणः, पं० शिवदत्तदाधिमथाः प्रामुख्यं भजन्ति।

श्रीशर्ममहोदया राजस्थाने शेखावाटी क्षेत्रस्य प्रधाननगरस्थचमडियासंस्कृतमहाविद्यालये, खेतड़ीनगरस्थसंस्कृतविद्यालये च प्राचार्यपदमलमकुर्वन्। इमे महोदया महाराजसंस्कृतमहाविद्यालये साहित्यविभागाध्यक्षपदेनियुक्ताः १९६७ खिृष्टाब्दे राजसेवातो निवृत्ताः श्रीशर्माणो राजस्थानस्य प्रथम-मुख्यमन्त्रिणा श्रीहीरालालशास्त्रिमहाभागेन साग्रहं वनस्थलीविद्यापीठे वेदविद्यालये प्राचार्यपदे नियुक्ताः, पुनश्च तत्रैव मानदाचार्यपदेऽपि प्रतिष्ठापिताः।

श्रीशर्मणां छात्रावस्थात एव काव्यरचनाभिरुचिरासीत्। 'संस्कृतरत्नाकर' पत्रिकायां श्रीशर्म-महोदयानां रचनाः प्रकाशिताः सन्ति। एभिर्गोपीनाथदाधिमथप्रणीतस्य आनन्दनन्दनाभिधस्य काव्यस्य व्याख्या कृता। श्रीशर्मणामधोलिखिताः कृतयः प्रथिताः सन्ति—१. बिहारिस्मारिका, २. वीरेश्वरप्रत्य-भिज्ञानम्, ३. शिवप्रत्यभिज्ञानम्, ४. श्रीलक्ष्मीनाथ जीवनवृत्तम्।

श्रीमन्तो जगदीशशर्माणो राजस्थानशासनेन, राजस्थानसंस्कृतसंस्थानेन, राजस्थानसंस्कृत परिषदा च संस्कृतसेवायै सम्मानिताः। १९८२ खिृष्टाब्दे राष्ट्रपतिमहाभागैः राष्ट्रपतिसम्मानेन च सत्कृताः। काव्यसमालोचनक्षेत्रे श्रीशर्मणां नीरक्षीरविवेकदृष्टिःसर्वथा प्रशस्या वरीवर्ति। उत्तरप्रदेश-संस्कृतसंस्थानं श्रीजगदीशशर्मणो विशिष्टांसंस्कृतसेवां परिलक्ष्य एनम् एकपञ्चाशत्सहस्ररूप्यकाणां विशिष्टपुरस्कारेण सभाजयद् गौरवमनुभवति।

डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित

(विशिष्ट पुरस्कार)

रु० ५१,०००/-

डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित मूलतः काश्मीरी हैं। सम्प्रति श्री पण्डित जम्मू में निवास करते हैं। सम्प्रति इनकी अवस्था ८१ वर्ष की है। अनुमानतः आपका जन्मकाल १९१५ ई० है।

डॉ० बलजिन्ननाथ पण्डित ने शास्त्री, एम०ए० (संस्कृत) और पी-एच०डी० (शैवदर्शन) उपाधियाँ प्राप्त की। आपने पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ परीक्षा में और शास्त्री में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

डॉ० पण्डित का अध्यापन कार्य संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक के रूप में प्रारम्भ हुआ। आपने २२ वर्षों तक आर्ट्स कालेजों में संस्कृत का अध्यापन किया। डॉ० पण्डित ने हिमाचल विश्वविद्यालय में ५ वर्षों तक सफलतापूर्वक संस्कृत पढ़ाया। आप १० वर्षों तक श्री रणवीर विद्यापीठ जम्मू की काश्मीर शैव दर्शन योजना के शोधनिदेशक भी रहे।

डॉ० पण्डित कुशल अध्यापक होने के साथ ही एक सफल लेखक भी हैं। आपने संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में ग्रन्थ लिखे हैं। आपके द्वारा लिखित प्रमुख ग्रन्थ निम्न हैं—१. स्वातन्त्र्यदर्पणः, २. विंशतिकाशास्त्रविमर्शिनी, ३. शैवाचार्यो नागार्जुनः, ४. आत्मविलासविमर्शिनी, ५. ललितास्तवरत्नटीका, ६. काश्मीरशैवदर्शनस्य बृहत् कोशः, ७. काश्मीर शैवदर्शन, ८. वैष्णवागम रहस्य, ९. अमृतवाग्भवाचार्य चरित, १० एप्रोच आफ काश्मीर शैविज्म, ११. हिस्ट्री आफ काश्मीर शैविज्म, १२. एन इण्ट्रोडक्सन टु काश्मीर शैविज्म, १३. काश्मीर शैवदर्शन का परिचय आदि।

डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित संस्कृत के विशिष्ट विद्वान् हैं। आप दर्शनशास्त्र के, विशेषकर काश्मीर शैवदर्शन के मर्मज्ञ मनीषी हैं। आपकी कृतियों में शैवदर्शन का गूढ़ विवेचन आपके गम्भीर वैदुष्य का परिचायक है।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित की प्रचुर संस्कृत सेवा को देखते हुए आपको इक्यावन हजार रुपये के विशिष्ट पुरस्कार से पुरस्कृत कर गौरव का अनुभव करता है।

डॉ० बलजिन्नाथपण्डितः

(विशिष्टपुरस्कारः)

रु० ५१,०००/-

डॉ० बलजिन्नाथपण्डिता मूलतः काश्मीराःसन्ति। सम्प्रतीमे जम्मूनगरे निवसन्ति। अनुमानत एषां जन्म १९१५ वर्षेऽभूत्।

डॉ० पण्डितमहोदयाः शास्त्री, एम०ए०, पी-एच०डी० इत्यादीनुपाधीन् अलभन्त। श्रीमन्तः पण्डिताः पञ्जाबविश्वविद्यालस्य प्राज्ञपरीक्षायां विशारदपरीक्षायां शास्त्रिपरीक्षायाञ्च सर्वप्राथम्यमभजन्। पण्डितमहोदयानामध्यापनकार्यं संस्कृतपाठशालायां प्रधानाध्यापकरूपेण प्रारब्धम्। इमे हि २२ वर्षाणि यावत् कलामहाविद्यालयेषु अध्यापनमकुर्वन्। हिमाचलविश्वविद्यालये पञ्च वर्षाणि यावत् साफल्येन संस्कृतमपाठयन्। श्रीमन्तः पण्डिताः दशवर्षपर्यन्तं श्री रणवीरविद्यापीठस्य काश्मीरशैवदर्शनयोजनायाः शोधनिदेशका अप्यासन्।

डॉ० पण्डिता न केवलं कुशलाध्यापका अपि तु एते सफललेखका अपि सन्ति। एभिर्महोदयैः संस्कृत-हिन्दी-आँग्लभाषासु बहुनि पुस्तकानिविरचितानि। डॉ० पण्डितप्रणीताः प्रमुखा ग्रन्था अधोलिखिताः सन्ति—१. स्वातन्त्र्यदर्पणः, २. विंशतिकाशास्त्रविमर्शिनी, ३. शैवाचार्योनागार्जुनः, ४. आत्मविलासविमर्शिनी, ५. ललितास्तवरत्नटीका, ६. काश्मीरशैवदर्शनस्यबृहत्कोशः, ७. काश्मीरशैवदर्शन, ८. वैष्णवागमरहस्य, ९. अमृतवाग्भवाचार्यचरित, १०. एप्रोच आफ काश्मीर शैविज्म, ११. हिस्ट्री आफ काश्मीर शैविज्म, १२. एन इण्ट्रोडक्शन टु काश्मीर शैविज्म, काश्मीर शैवदर्शनस्य परिचयः।

सन्ति डॉ० बलजिन्नाथपण्डिताः संस्कृतस्य विशिष्टा विद्वांसः। श्रीमन्तः पण्डिता दर्शनशास्त्रस्य, विशेषतः काश्मीरशैवदर्शनस्य मर्मज्ञा मनीषिणः सन्ति। श्रीमतां कृतिषु शैवदर्शनस्य गूढविवेचनमेषामप्रतिमवैदुष्यं व्यनक्ति।

उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानं डॉ० बलजिन्नाथ पण्डितानाम् विशिष्टं वैदुष्यं आकलय्य एनमेकपञ्चाशत्सहस्ररूप्यकाणां विशिष्टपुरस्कारेण सभाजयद् महद्गौरवमनुभवति।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान

द्वारा वर्ष १९९६ के पुरस्कृत विद्वानों का विवरण

१,५१,०००/- विश्वभारती संस्कृत पुरस्कार

१. आचार्य पण्डित करुणापति त्रिपाठी
औरंगाबाद
वाराणसी

५१,०००/- विशिष्ट पुरस्कार

२. प्रो० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल
७२ ए, दरभंगा कालोनी
इलाहाबाद

३. प्रो० वीरेन्द्रकुमार वर्मा
बी-५/२२ शीशमहल कालोनी, कमच्छा
वाराणसी

४. प्रो० भोलाशंकर व्यास
१७, संकट मोचन कालोनी
वाराणसी–२२१००५

५. आचार्य श्री जगदीश शर्मा
म०नं० ३०५८, कल्याण मार्ग
चांदपोल बाजार
जयपुर–३०२००१

६. आचार्य श्री बलजिन्नाथ पण्डित
५१, आदर्शनगर
पो०आ० बनतालाब
जम्मू–१८११२३

२५,०००/- नामित पुरस्कार

१.	आर्यासहस्ररामम्	डा० जगन्नाथ पाठक ३०८, भरद्वाजपुरम् इलाहाबाद
२.	चतुर्दशलक्ष्मी	श्री धीरेन्द्राचार्य सत्यगिरि ५५/३ आनन्दनिलय, ग्राउण्ड फ्लोर १ मैनरोड, हनुमन्तनगर, बंगलौर
३.	ऊर्मिचूड़ा	डा० केशवचन्द्रदास अध्यक्ष, न्यायदर्शन विभाग श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी
४.	सौन्दर्यवल्ली	प्रो० अमरनाथ पाण्डेय संस्कृत विभागाध्यक्ष, काशीविद्यापीठ वाराणसी
५.	काशिकावृत्तिसार (पूर्वार्ध)	डा० चन्द्रभानु त्रिपाठी ३४, बलरामपुर हाउस, इलाहाबाद

२५,०००/- वेदपण्डित पुरस्कार

१.	शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा	श्री राघवेशमणि त्रिपाठी श्री सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय मेंहदावल, बस्ती ।

२.	शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा	श्री नरेन्द्र ठाकुर डी-१/२६ लाहौरी टोला वाराणसी
३.	शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन साखा	डा० रामप्रसाद उपाध्याय वेदभवन, संस्कृत महाविद्यालय, रुद्रप्रयाग जिला-चमोली
४.	शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा	श्री चन्द्रकिशोर चतुर्वेदी मिथिलाबिहारी आश्रम बी-१–१५५, अस्सी रोड, वाराणसी
५.	शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा	श्री भीमशंकर दीक्षित ४१४/२३५ सराय माली खाँ लखनऊ
६.	शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखा	श्री गोविन्द लक्ष्मीकान्त पुराणिक पुराणिक निवास–के २०/१३, घासी टोला वाराणसी
७.	कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा	श्री रमेश शर्मा द्रविड़ बी–७/१७५, हरारबाग, केदारघाट वाराणसी
८.	कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा	श्री ईश्वर घनपाठी बी-५/३०३ए हनुमानघाट वाराणसी
९.	सामवेद कौथुमी शाखा	श्री गगन कुमार चट्टोपाध्याय श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेदमीमांसा अनुसंधान केन्द्र हनुमानघाट, वाराणसी
१०.	अथर्ववेद	श्रीनारायण रामकृष्ण होशमने श्री पट्टाभिराम शास्त्री वेदमीमांसा अनुसंधान केन्द्र हनुमानघाट, वाराणसी

११,०००/- विशेष पुरस्कार

१.	भारतीसंस्कृति–सौरभम्	प्रो० रामजी उपाध्याय महामनापुरी, वाराणसी—५
२.	दौर्वासस्यमस्यसर्वादौ	स्वामी हरिहरानन्द द्वारा–गोविन्द स्वरूप शर्मा ५२, छत्तादेवीदास, पो० खुरजा जिला बुलन्दशहर
३.	द्यावापृथ्वीयम्	डा० मथुरादत्त पाण्डेय १२९२ सेक्टर, १५ पंचकुला हरियाणा
४.	पराम्बानुग्रहवैभवम्	डा० गोपीनाथ टण्डन ददन सदन, अमेठी, सुल्तानपुर
५.	शाख्यायनगृह्यसूत्रम्	डा० गंगासागरराय सर्वभारतीय काशीराजन्यास दुर्गरामनगर, वाराणसी
६.	सिन्धुराजवधम्	डा० बलभद्रप्रसाद गोस्वामी १४, अशोकनगर, बरेली

५,०००/- विविध पुरस्कार [प्रत्येक]

१.	कालीपूजापद्धतिः	डा० प्रकाश पाण्डेय गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद
२.	वादिविनोदः	डा० विश्वम्भरनाथ गिरि गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ आजादपार्क, इलाहाबाद
३.	सिद्धांतशतकम्	डा० जयदत्त शास्त्री स्वस्त्यन तल्ला थपलिया अल्मोड़ा–२६३००१

४.	देवभक्तिरंगिणी	डा० रामकिशोर मिश्र म०मा० डिग्री कालेज, केकड़ा, मेरठ
५.	निष्यन्दिनी	डा० जनार्दन प्रसाद पाण्डेय चांदपुर सलोरी, मानसनगर सी–लाइन, इलाहाबाद—६
६.	यक्षदूतम्	पं० लालबिहारी मिश्र सी० के० ३४/६ ललिताघाट वाराणसी
७.	व्यक्तिविवेकः	डा० विभारानी दूबे बी–३०/७२ए, नगवा, लंका वाराणसी
८.	अस्मिता	डा० जयशंकर त्रिपाठी २६१, बाघम्बरी गृहयोजना भारद्वाजपुरम्, इलाहाबाद–२११००६
९.	धातुप्रत्ययालोकः धात्वर्थः चन्द्रिका च	डा० गोपराजुरामा अध्यक्ष साहित्य विभाग गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद
१०.	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी	डा० आजाद मिश्र केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ लखनऊ
११.	अलंकार मंजरी	डा० बृजेशकुमार शुक्ल ७८ए बादशाहबाग विश्वविद्यालय परिसर लखनऊ
१२.	वीरभानूदयकाव्यम्	डा० सुद्युम्नाचार्य मु०–म० टाउन पोस्ट ग्रेजुऐट कालेज, बलिया
१३.	धर्म और दर्शन	डा० विश्वम्भर दयाल अवस्थी अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अतर्रा महाविद्यालय अतर्रा, बांदा

१४.	पंचपर्णम्	डा० ओम् प्रकाश शास्त्री प्राच्य संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
१५.	गाथासप्तशती	डा० विश्वनाथ पाठक (अनुवादक) ग्रा० पटखौली तकिया पौ० मुस्तफाबाद जिला—अम्बेदकरनगर
१६.	युगदर्शन	आचार्य बाबूराम अवस्थी बाजपेयी कालोनी, लखीमपुर खीरी
१७.	नाटककारहस्तिमल	डा० कैलासनाथ द्विवेदी, डा० उदयप्रताप सिंह सेंगर म०प्र० स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, कोंच, जालौन
१८.	दशाफल विवेचन	आचार्य भास्करानन्द लोहनी १५, चादगंज गार्डेन, लखनऊ
१९.	आहूतिः स्वातन्त्र्ययज्ञे	डा० रामशंकर अवस्थी ग्रा०पो० औनहा; जिला कानपुर देहात
२०.	शालिनी खण्डकाव्यम्	आचार्य शम्भूदयाल अग्निहोत्री ४/७ नाला सिक्तसुमाल (पक्कापुल) फर्रुखाबाद